सम्पादक के नाम पत्र

मज़दूर मोर्चा 16-31 जुलाई के अंक में 'पुलिसकर्मी लूट कर खाना अपना अधिकार समझते हैं' ये पुलिस वालों का सच में पर्दाफ़ाश किया गया है, इस कहानी को पढने के बाद मुझे 20 साल पहले की बात याद आ गई। सच में पुलिसकर्मी हर जगह अपना दादागिरी दिखाना जन्मसिद्ध अधिकार समझते हैं। सिर्फ थाने पर ही नहीं, वो पूरे क्षेत्र पर अपना कब्ज़ा जमा कर रखते हैं जितना उनका अधिकार होता है उससे कई गुणा ज़्यादा जनता को लूट कर अपनी जेब में भरते हैं।

ऐसा भी नहीं है कि पुलिस का ये रवैया सिर्फ़ फ़रीदाबाद मे ही हों। ये हमारे देश की ही परम्परा है। जो जहां रहेंगे जनता को लुट कर खायेंगे? जनता क्या करेगी ये निदोर्षों को कभी भी कितनी बार फ़सा दिये हैं। इसलिये पुलिसवालों को भ्रष्टाचार करते हुए देखकर भी अपनी आखें बंद रखते है। बोलने का मतलब इन्हीं को फ़िर फ़सना है। तो इन बाबूओं से दुश्मनी कौन मोल ले।

मैं बिहार के छोटे शहर पटना ज़िला के बख्त्यिारपुर जहां मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का पैतृक घर है, वहां की कहानी बता रही हूं। उस समय वहां लालू और राबड़ी देवी का राज था। वहां रेलवे के दारोगा की करनी को खूब देख चूकी हूं। उनके यहां का रूटीन था कि सुबह वहां के ठेकेदार जिसको रंगदार कहा जाता है। वह हर जगह और अभी भी स्टेशन से लेकर ट्रेन तक रंगदारी वसूल करता है। चाय वालों, पेपर वालों, शब्जी से लेकर स्टेशन में जो भी कुछ बेचने आ गया सब पर अपना रोब जमाकर पैसा वसूलते हैं, जिसको रंगदारी टैक्स कहा जाता है। एक बार मैं देखकर पूछी थी कि ये इतने ताव में क्यों लोगों को डांट रहे हैं। तो उन लोग़ों ने कहा कि ये रंगदारी वसूल करते हैं।

वहां के थाना ईंचार्य को बड़ा बाबू के नाम से लोग जानते हैं। वहां स्टेशन के समीप ही मेरा भी घर था बराबर हम लोग देखते थे कि सूबह और शाम ठेकेदार आकर बड़ा बाबू के सेवा में उपस्थित हो जाता था। सूबह के समय ब्रेड, मक्खन, शब्जी, मिठाई, फल, दुध से लेकर सारा सामान लाकर उनकी मैडम के सामने रख देता था। फ़िर शाम के समय आकर पुछता था कि मेम साहब अभी क्या चाहिये। उनकी मैडम जो भी सामान मंगाना रहता था शब्जी, मीट, मूर्गा, या जो कहती थी वो सब रंगदारी में लाकर देता था। उसके बावजूद बड़ा बाबू को पहले करारी रहता है कि तुम रोज़ कितने पैसे रंगदारी वसूल कर दोगे। ऐसे तो अनेक इस काम के लिये इनको जी हजूरी करता है किन्तु करने से क्या, जो ज़्यादा पैसे वसूल कर देगा, और वहां पर ज़्यादा रंगदारी दिखायेगा उसी को वो रखेंगे। दो ठेकेदार सेवा में रखते हैं। उस समय वहां लालू राज था और वहां यादवों की ज़्यादा रंगदारी चलती थी, इसलिये उन्होंने यादव को ही रखना ज़्यादा पसंद किया। दोनों को एक-एक दिन की ड्यूटी होती थी। जो सेवा-पानी में कमी किया उसको तुरंत बाहर कर दिया और उसके जगह दूसरे को रख लिया।

एक बार शाम के समय मैं शब्जी लाने मार्केट जा रही थी, तो दारोगाजी के मैडम ने मुझको बुला ली। मैं उनके घर पर बैठी थी उसी समय एक ठेकेदार आया। मेमसाहब को सलाम किया और पूछा सेवा। मेमसाहब अपनी लम्बी-चौड़ी लिस्ट लिखकर ठेकेदार के हाथों में देते हुए बोली। इसके अलावा (काशी) उनका घरेलू नौकर था उसको डेली 10 रुपये तुम वसूल करोगे उसमें से दिया करना। फ़िर दो बार बोली समझ गया न, मेरे पैसे से मत काटना तुम अपने पैसे देना। ठेकेदार बोला, जरूर आप जो कहेंगी उसको कोई थोड़े ही काट सकता। मैं थोड़ी देर बैठने के बाद बोली चाची मैं जा रही हूं मुझे शब्जी लेकर घर जाना है। वह बोली बेटा तुम बैठो शब्जी तुम्हारे जाने से पहले वहां पहूंच जायेगी। थोड़ी देर बाद ठेकेदार आया और वो जो शब्जी वसूल कर लाया था उसी में से मेरे घर भी उसीके मार्फ़त भेज दी। मैं भी सोची चलो शब्जी तो मेरे घर आ ही गयी तो मैं थोड़ी देर इनसे और गप्पें मार लेती हूं। ठेकेदार शब्जी मेरे घर देकर वहां फ़िर वापस आया और पूछा कल का क्या-क्या प्रोग्राम है। मेम साहब बोलीं घर की पूरी राशन ला दो और उसे पैसे भी निकाल कर नहीं दी। वह कल होकर मुझको मिला तो मैं उससे पूछ ली। क्या भाई बड़ा बाबू के यहां राशन ले आया। तब उसने कहा क्या कहें, इनकी मेमसाहब तो बड़ी ही टांट (कड़क) हैं सोचती हैं मेरा सारा खर्चा फ़ोकट में रंगदारी से ही चले। पैसे दी नहीं तो मैं चावल, गेहूं कहां से लाकर देता इनकी डेली की शब्जी, से लेकर छोट-मोटा घरेलू सामान जिसमें साबून, सर्फ, सेम्पु, तेल, और जैसे 150 रुपये तक का पूरा सामान रोज लाकर देने का करारी है। इसके अलावा अपना नौकर को 10 रुपये डेली देने को कहती हैं। फ़िर 300 रुपये डेली उसमें से कहीं कोई खर्च का हिसाब नहीं। वो थाथी पूरे चाहिये, मैं बोली, कल साहब की बेटी की शादी होगी तो उसमें भी सारा खर्च तुम्ही को देना होगा, और बड़ा बाबू के इस पैसे में से मत काटना। नहीं तो रंगदारी टैक्स और ज़्यादा बढा दो तुम कहां से दोगे। कहीं साहब नाराज हो जायेंगे तो तुमको निकाल कर दुसरे को न रख लें। उनको क्या एक को बुलायेंगे चौदह आयेंगे।

कभी को फेरीवाला या और कुछ सामान बेचने वाला आ जाता था तो हम लोग के यहां नहीं भी लिया गया किन्तु उनकी मैडम जरूर लेतीं थीं। कोई मज़ाक से बोल दे कि आपके यहां दो नम्बर के बहुत पैसे आ रहे हैं तो आप ले लीजिये हम लोग कहां से लेंगे। तो मैडम बोलती थीं कि ये सिर्फ़ हमारे अकेले का नहीं होता ये तो ऊपर तक बंटता है। मैं पूछी कि चाचाजी के अलावा रंगदारी में से और किसी का हिस्सा होता है, तो सारा रिपोर्ट दीं कि आधी तो मोकामा के इंस्पेक्टर साहब लेते हैं और आधी में से आधी चाचा का होता है। फ़िर उसकी आधी जमादार साहब लेते हैं और थोड़ा बहुत जो बचता है वो फ़िर सिपाही और लोग आपस में बांटते हैं। शब्जियां बड़ा बाबू से लेकर जमादार और सिपाही फ्री में ही खाते है। शब्जी तो आस पड़ोस में जमादार साहब की मैडम तो बेचती भी थीं और उस पैसे को जेवर बनवाती थीं।

कुछ दिन बाद बड़ा बाबू वहां रेलवे के जितने सरकारी पेड़ थां सब को कटवाकर चौखट और दरवाज़ा बनवाये और सबको अपने घर भेजवा दिया। कुछ दिन बाद वह लाइन में चले गये तो उनकी साड़ी साहेबगीरी खत्म हो गई। अब उनके जगह दूसरे साहब आये तो उस रेलवे पर उनका कब्ज़ा रहा। मैं फ़िर एक दिन उनके यहां गई तो वो चाय बनवाई मेरी मां कह दी कि आपके घर मीट, मूर्गा बना होगा रहने दीजिये मैं चाय नहीं पीऊंगी। वो कहने लगी बहनजी, अभी तो हड़ताल चल रहा है। अभी कहां से कौन मीट और मूर्गा लेकर आयेगा। अभी पैसे से थोड़े ही न मंगाना है। मैं भी बोल दी हां चाची पैसे देकर तो मंगाने में अखड़ होगी ही आदत जो बनी है फ्री की खाने का, आपके साथ-साथ हम लोग को भी यही आदत बन गयी। मेम साहब कहने लगीं कि सबको थोड़े ही न दिया जा सकता अपने लोग़ों को दिया जाता है हम लोग फ़ेंक देंगे सो ठीक है लेकिन ऐसे लोगों को नहीं देंगे जो दुशमन बन जाये, क्योंकि रेलवे से फल की पेटियां और सामान गायब करवा देते थे। वहीं, लाइन में जाने के बाद आकाश के तारे दिखाई पड़ने लगते थे।

दारोगा जी 8 महीने लाइन में रहे अब इन लोगों का हालत तो बड़ा खस्ता हो गया। एक दिन मेरे पिताजी से बड़ा बाबू बोले मेरे जगह दूसरा दारोगा होता तो टीन के कटोरे में भीख मांगता। किन्तु मैं ही ऐसा दारोगा हूं कि आठ महीने लाइन में रहने पर भी मेरी स्थिति में कोई बदलाव नहीं आया। (यानी कि वे अपने आप को हरिश्चन्द्र घोषित कर रहे थे) कि मैं कहीं से कोई घूस नहीं खाता हूं। मेरे पिताजी तो सारी बात जानते थे उन्होंने कह दिया कि बात ही कुछ ऐसी है कि आप के नाम पर ही लोग खूद डर जाते हैं। वही 8 महीने से कहां कोई आदमी आपके यहां जाता है।

जब बड़ा बाबू को जाने का वक्त आया, उन्होंने कुछ और पेड़ कटवाया और खिड़की चौखट बनवाया इस बार घर न भेजकर मेरे यहां रखवा दी। कुछ दिन के बाद उनको खबर भी भेजवा दिये कि अपना सामान मंगवा लें। उन्होंने कोई ध्यान नहीं दिया। कुछ तो दिमक खा गया कुछ पड़ी थी तो हम लोग अपने काम में ले आये 20 वर्ष हो गये आज तक कोई उनका सामान लेने नहीं आया। उनको क्या, राम धनी, के कौन कमी, वाली बात जहां फिर गये होगे वहां राम राज मिला ही होगा।

-नीलिमा

कलबुर्गी की हत्या तार्किकता का गला घोंटने का प्रयास

एम.एम. कालबुर्गी | गोविन्द पंसारे | नरेन्द्र दाभोलकर

30 Aug 2015 | 20 Feb 2015 | 20 Aug 2013

एक एक कर के सभी बुद्धिजीवियों की हत्या की जा रही है

कट्टरपंथी पांखडी जब तर्क से नहीं जीत पाते तो वे हिंसा पर उतर आते हैं ।

गत 30 अगस्त 2015 को प्रोफेसर मलीशप्पा माधीवलप्पा कलबुर्गी की हत्या से देश के उन सभी लोगों को गहरा सदमा पहुंचा है जो उदारवादी समाज के हामी हैं, तार्किकता के मूल्यों का आदर करते हैं और अंधश्रद्धा के खिलाफ हैं। प्रोफेसर कलबुर्गी, जानेमाने विद्वान थे और उन्होंने 100 से भी अधिक पुस्तकें लिखीं थीं। वे 12वीं सदी के कन्नड़ संत कवि बस्वना की विचारधारा को जनता के सामने लाए। वे मानते थे कि लिंगायत, जो कि बस्वना के अनुयायी हैं, को धार्मिक अल्पसंख्यक का दर्जा मिलना चाहिए क्योंकि वे वैदिक परंपरा का हिस्सा नहीं हैं। बस्वना के छंदों में निहित शिक्षाओं, जिन्हें वचन कहा जाता है, का उन्होंने गहराई से अध्ययन किया था और इसने उनकी तार्किकतावादी सोच को गढ़ने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की थी।

कलबुर्गी द्वारा बस्वना की शिक्षाओं का प्रचार.प्रसार और मूर्तिपूजा व ब्राह्मणवादी धार्मिक अनुष्ठानों की उनकी खिलाफ्त ने बजरंग दल जैसे हिंदुत्ववादी संगठनों को उनका शत्रु बना दिया। तथ्य यह है कि पुरातनकाल से नास्तिकतावादी परंपराए हिंदू धर्म का हिस्सा रही है। इस परंपरा के एक प्राचीन उपासक थे चार्वाक। मूर्तिपूजा का विरोध भी हिंदू धर्म के लिए कोई नई बात नहीं है। आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानंद सरस्वती ने मूर्तिपूजा न करने का आह्वान किया था।

कलबुर्गी की हत्या से कुछ समय पहलेए पड़ोसी बांग्लादेश में तीन धर्मनिरपेक्ष युवा ब्लॉगर्स की हत्या कर दी गई थी। सीरिया में इस्लामिक स्टेट के कट्टरवादियों ने खालिद अल.असद नामक अध्येता को जान से मार दिया था। महाराष्ट्र में लगभग दो वर्ष पहले, प्रसिद्ध तार्किकतावादी डॉण् नरेंद्र दाभोलकर की हत्या ने पूरे देश में हलचल पैदा कर दी थी। उनके प्रयासों से ही महाराष्ट्र में काला जादू और अंधश्रद्धा विरोधी कानून लागू हुआ था। एक अन्य सम्मानित कार्यकर्ता कामरेड गोविंद पंसारे को लगभग एक वर्ष पहले मौत के घाट उतार दिया गया था। पंसारे जिन कई क्षेत्रों में सक्रिय थे, अंधश्रद्धा का विरोध उनमें से एक था। महाराष्ट्र में अत्यंत सम्मान से देखे जाने वाले शासक शिवाजी पर उन्होंने एक पुस्तक लिखी थी जो खासी लोकप्रिय हुई थी। पंसारे अपनी पुस्तक में बताते हैं कि शिवाजी किसानों के हितैषी थे व सभी धर्मों का सम्मान करते थे। शिवाजी के चरित्र का यह प्रस्तुतिकरण, हिंदुत्ववादियों को रास नहीं आया।

तुर्की-ब-तुर्की / दूसरो को नहसीत, खुद मियां फजीहत

''दिल्ली में आरएसएस की 3 दिवसीय जांच-पड़ताल मीटिंग, जिसमें प्रधानमंत्री मोदी समेत तमाम केंन्द्रीय मन्त्रियों ने अपने-अपने काम का लेखा-जोखा पेश किया, के बाद संघ नें मोदी सरकार को चरित्र एवं कार्यकुशलता का प्रमाणपत्र पकड़ा दिया।''

हमारा कहना है-

 मोदी जी अब तक किसी को शक रहा नहीं कि आप और आपकी सरकार को कदम-कदम का मार्गदर्शन नागपुर के हैडमास्टर मोहन भागवत से लेना पड़ता है। यानी समीकरण वही है जो आपके सत्तारूढ होने से पहले मनमोहन व सोनिया के बीच हुआ करता था। कौन नहीं जानता कि आप आरएसएस के आशीर्वाद से भाजपा के नेता बनाये गये। पर प्रधानमंत्री बनकर भी आपको आरएसएस का ही हुकुम बजाना पड़ेगा, देश की जनता को यह किसी ने नहीं बताया।

 लगता है आरएसएस ने आपके कार्पोरेट एजेंडे के आगे हथियार डाल दिये हैं, जबकि आपकी सरकार ने आरएसएस के हिन्दुत्ववादी एजेंडे के चलते रहने का आश्वासन दिया है। यहां तक कि आरएसएस वालों ने पाकिस्तान तक को अपना भाई कह डाला। यह तभी संभव है जब कार्पोरेट स्वार्थों की शह पर कोई बड़ी 'डील' सम्पन्न हो गयी हो। हालांकि इस डील के खिलाफ़ हिन्दुस्तान में विहिप के तोगड़िया और पाकिस्तान में वहां के थल सेना अध्यक्ष शरीफ़ ने मोर्चा खोल दिया है। जाहिर है वे भी 'डील' से होने वाले अपने-अपने नुकसान की भरपाई चाहेंगे ही ।

 यहां हम यह बताना चाहेंगे मोदी जी कि चोर को कहो चोरी करे और शाह को कहो कि जागते रहो, वाला आपका खेल ज़्यादा दिन जनता की आंखों में धूल नहीं झोंक पायेगा। दिल्ली चुनाव में आप लोग पिट ही चुके हैं बिहार के आगामी चुनाव में भी आपको पिटना ही है। क्योंकि आपका असली एजेंडा जनता पर उज़ागर हो चुका है। अम्बानी-अडानी जैसे कार्पोरेटों का घर भरना जमाखोर व्यापारियों की जेबें भरने के लिये किसानों के पेट पर लात मारना, हिन्दू-मुस्लिम दंगे कराकर वोट की फ़सल काटना, गांधी-नेहरू जैसे स्वतंत्रता सेनानियों को बदनाम कर गोडसे-सावरकर को महिमामंडित करना, नौजवानों और श्रमिकों को जुमलेबाज़ी से बहलाना आदि-आदि।

 काला धन, महंगाई किसान की तबाही, भ्रष्टाचार स्त्री सुरक्षा जैसे मसलों पर आपकी सरकार मोदी जी पूर्णतया विफ़ल रही है, इसके बावजूद अगर मोहन भागवत एण्ड कम्पनी 'अच्छे दिन' का प्रमाणपत्र दे रहे हैं तो इसका एक ही अर्थ हो सकता है कि जनता खुद ताल ठोंक कर खड़ी हो और आप लोग़ों को सबक सिखाये।

''यूपी में मुलायम सिंह की समाजवादी पार्टी बेशक हमारा खुल कर विरोध करती है, लेकिन संसद को चलाने में उनका सहयोग दर्शाता है कि वे लोकतंत्र के रक्षक हैं।''-नरेन्द्र मोदी

हमारा कहना है:

मोदी जी किसे बेवकूफ बना रहे हो? मुलायम सिंह लोकतंत्र की रक्षा के लिये संसद नहीं चलवा रहे थे बल्कि लूट-मार एवं गुंडागर्दी में लिप्त अपने परिवार की रक्षा हेतु संसद चलवाने के लिये आपके आगे पीछे घूम रहे थे। इसी मजबूरी के चलते उन्होंने बिहार के महागठबंधन से अपना नाता तोड़ा है।

 यादव सिंह घोटाले की सीबीआई जांच तो अभी ढंग से शुरू भी नहीं हुई है कि उसकी आंच से मुलायम परिवार मोम की तरह पिघलने लगा है। मुलायम के भाई रामगोपल के सांसद बेटे अक्षय द्वारा यादव सिंह की एक कम्पनी से व्यापार के नाम पर जो करोड़ों की घूस ली है वह अब उज़ागर हो चुकी है। जब जांच चलेगी तो पता नहीं और कितने घोटालों की आंच मुलायम परिवार को पिघलायेगी।

 वैसे भी मुलायम सिंह कांग्रेसनीत यूपीए राज में संसद के भीतर साफ़-साफ़ कह चुके हैं कि सरकार के हज़ारों हाथ होते हैं, इसलिये सरकार से टकराना मुश्किल होता है। दरअसल उस वक्त भी मुलायम परिवार के ऊपर सीबीआई का शिकंज़ा कसता जा रहा था। उसी के दबाव में वे, जब भी सरकार चाहती थी, विपक्षी एकता तोड़ कर सरकार की गोद में आकर बैठ जाते थे।